SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 2020-22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Lev Vygotsky

DATE - 25/06/2021

Lev Vygotsky (लेव वायगोट्स्की)

वाइगोट्स्की का जन्म 17 नवम्बर 1896 ई० में रूसी साम्राज्य के ओरसा नामक स्थान पर एक रूसी यहूदी परिवार में हुआ था। इनके पिता बैंकर थे। यहूदी कोटा लाटरी के माध्यम से 1913 ई० में मास्को विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तथा कानून में मास्टर डिग्री हासिल की। तत्पश्चात शिक्षण कार्य प्रारंभ किया। मास्को के एक मनोवैज्ञानिक संस्थान में सहयोगी बनने हेतु वाइगोत्स्की को आमंत्रित किया गया जहाँ वे द्वितीय श्रेणी के वैज्ञानिक के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। सन् 1925 ई० के अंत में वाइगोटस्की ने "The Psychology of Art" में अपना शोध प्रबंध पूरा किया एवं इसके लिए सम्मानित हुए। मात्र 37 वर्ष की उम्र 11 जून 1934 ई० में इस महान मनोवैज्ञानिक का देहान्त हो गया। इस प्रकार वाइगोट्स्की ने मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया जो उनके रिसर्च पेपरों, व्याख्यानों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। वे एक अग्रणी - मनोवैज्ञानिक थे।

लेव वाय्गोट्स्की

⇓

रूस

सामाजिक सर्जनवादी दृष्टिकोण

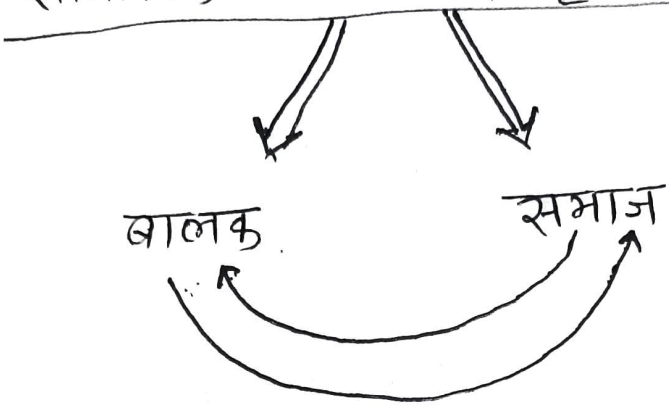

वाइगोट्स्की का बालकेंद्रित शिक्षा सम्बन्धी विचार :-

रूसी मनोवैज्ञानिक लेव वाइगोत्स्की का मत था कि बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों एवं भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए उन्होंने बच्चों के विकास के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसे समीपस्थ विकास का क्षेत्र सिद्धान्त भी कहते हैं।

समीपस्त विकास का क्षेत्र सिद्धान्त
(Zone of Proximal Development)
(ZDP)

जीन पियाजे ने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में परिपकवता को महत्वपूर्ण स्थान दिया था, परन्तु सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ को अस्वीकृत कर दिया था। वायीगोत्स्की ने पियाजे द्वारा अस्वीकृत इसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर अपना ध्यान केन्द्रित किया एवं बताया कि बच्चों का विकास सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में ही सम्पन्न होता है जिसमें बच्चों को अपने वास्तविक विकास के स्तर (अर्थात जहाँ तक वे बिना किसी के मदद के अपने-आप कोई कार्य कर सकते हैं) से अलग उनके सम्भाव्य विकास के स्तर (अर्थात् जिसे वे सार्थक व महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सहायता से प्राप्त करने में सक्षम हैं) के तरफ ले जाने की कोशिश की जाती है। इन दोनो स्तरों के बीच के अंतर को वाइगोत्स्की ने समीपस्त विकास का क्षेत्र सिद्धान्त कहा है।

अब प्रश्न यह उठता है कि वाइगोटस्की के सिद्धान्त में समीपस्त विकास का क्षेत्र इतना क्यों महत्वपूर्ण है। इसके दो कारण बतलाये गए हैं—

(i) इससे यह पहचान करने में मदद मिलती है, कि बच्चे क्या जल्द ही अपने स्तर से कूद कर सकते हैं।

(ii) इससे यह भी पता चलता है कि हमलोग बच्चों के जैविक परिपक्वता के सम्बन्ध में एक सीमा या क्षेत्र (zone) के भीतर बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को आगे बढ़ा सकते हैं।

वाइगोट्स्की ने इस प्रश्न पर भी विचार किया है कि वयस्कों के साथ की गयी सामाजिक अंतः क्रिया किस तरह से बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में मदद करती है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि प्रायः शिक्षक एवं छात्र पारस्परिक शिक्षण प्रक्रिया में बारी बारी किसी कार्य को इस ढंग से करते हैं जिसमें शिक्षक बच्चे के लिए मॉडल के रूप में कार्य करते हैं।

वाइगोटस्की ने सामाजिक विकास में बच्चों की भाषा एवं चिंतन को भी महत्वपूर्ण साधन बतलाया है। उनका मत है कि छोटे बच्चों द्वारा भाषा का उपयोग सिर्फ सामाजिक संचार के लिए ही नहीं किया जाता बल्कि उसका उपयोग वे लोग

अपने व्यवहार को नियोजित एवं निर्देशित करने के लिए करते हैं, जिसे आंतरिक सम्भाषण या निजी सम्भाषण कहा जाता है। इसके माध्यम से बच्चे अपनी समस्याओं का समाधान ढूँढन की क्षमता स्वयं के बारे में अपनी सोच तथा दूसरे लोगों के बारे में नजरिया एवं सोच की क्षमता विकसित कर लेते हैं।